प्रसार पुस्तिका संख्याः- DEE/2021/24

पशुओं के साधारण रोग एवं प्राथमिक उपचार

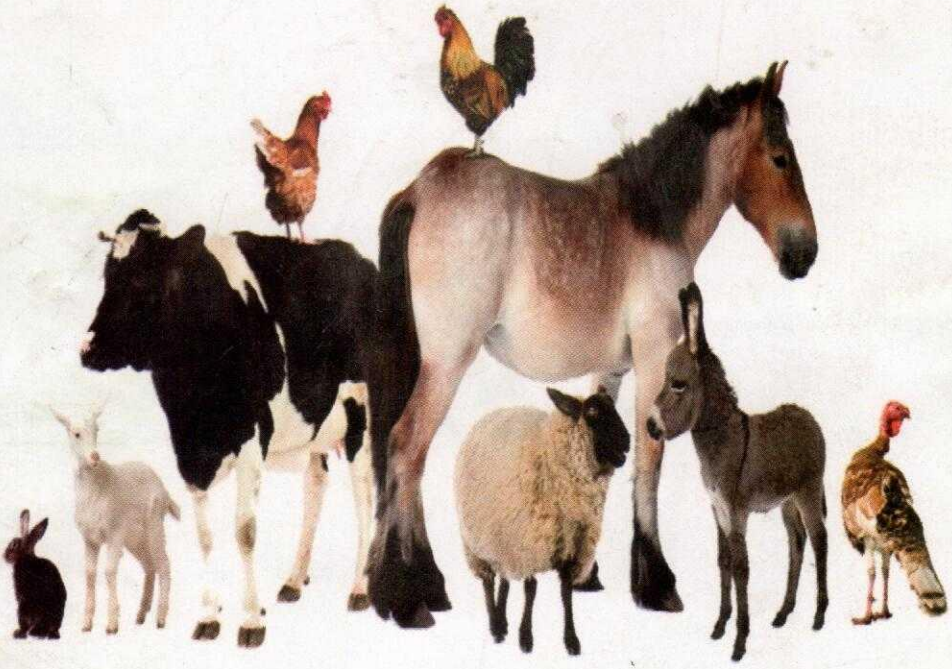

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-14

पशुओं के साधारण रोग एवं प्राथमिक उपचार

1.चोट लगना तथा घाव हो जाना

शरीर के किसी भाग पर चोट लगने से घाव हो जाता है जो इलाज के अभाव में सड़ जाता है। कभी–कभी उसमें कीड़े भी पड़ जाते हैं।

उपचार:

लाल पोटाश के एक प्रतिशत घोल से घाव साफकर उस पर टिंचर बेंजोइन का फाहा रखकर पट्टी बाँधें या हीमैक्स मलहम लगाएँ। यदि घाव में कीड़े पड़ गये हों तो तारपीन को तेल को मीठे तेल में मिलाकर उस पर लगाना चाहिए।

2.सींग टूटना

पशुओं के आपस में लड़ने से कई बार सींग का खोल उतर जाता है या सींग टूट जाती है।

प्राथमिक उपचार:

यदि सींग के ऊपर का खोल उतर गया हो और खून नहीं बह रहा हो तो टिंचर बेजोइन लगा दें या मीठे तेल की पट्टी बाँध दें। यदि खून निकल रहा हो तो सींग की जड़ के पास रस्सी बाँधकर खून बहना बंद करने का प्रयास करें तत्पश्चात् रूई का फाहा लगाकर टिंचर बेन्जोइन लगाएँ।

घरेलू इलाज:

खून बहना रोकने के लिए साफ लोहे को गर्म कर जख्म पर धीरे–धीरे लगाएँ। फिर सरसों के तेल में हल्दी मिलाकर गर्म कर ठंडा करें तथा घाव पर लेप करके ऊपर से पतला कपड़ा बाँध दें। ऐसा प्रतिदिन करें। अधिक खून निकलने पर डॉक्टर को तुरंत बुलावें।

3.जल जाना

इलाज:

जले स्थान पर तुरंत ठंडा पानी देर तक डालना चाहिए। इसके बाद भी यदि फफोला बन जाय तथा वह फूटकर जख्म बन जाये तो से लाला पोटाश के हल्के–गर्म घोल से साफ कर उसपर सल्फोनामाइड यचा निओस्पोरीन पाउडर दिन में दो बार लगावें।

घरेलू इलाज:

जलने पर अंडे का पीला भाग या अलसी को तेल और चूने का पानी लगाएँ। अधिक जलने पर डॉक्टर को दिखाए।

4.कन्धा आना

लक्षण:

कन्धा सूज जाना, कंधे पर गांठ बनाना, पशु का बार–बार कंधे की तरफ गर्दन हिलाना।

इलाज:

(क) कंधे के सूजन को गर्म पानी में नमक मिलाकर सेंके तथा आयेडेक्स मलहम से 15–20 मिनट तक दिन में दो बार मालिश करें।

(ख) यदि कंधे पर गाँठ बन गयी हो तो गर्म पानी से सेंकने के बाद लाल मलहम लगाएँ।

(ग) यदि गाँठ पक जाए जो उसका मवाद निकालकर पोटाश या मैगनीशियम सल्फेट से अच्छी तरह साफ कर हीमैक्स मलहम लगाएँ।

5.पेट फूलना या अफारा

लक्षण :

पशु के बायीं तरफ का पेट फूल जाता है। पशु घास खाना बंद कर देता है, सांस रूक–रूककर लेता है तथा बार–बार उठता–बैठता है।

इलाज:

(क) 30 से 50 ग्राम तारपीन के तेल को 500 ग्राम मीठे तेल (अलसी तेल) में 10–15 ग्राम हींग के साथ मिला लें तथा पशु को धीरे–धीरे पिलाएँ।

(ख) पशु के मुँह को दोनों जबड़ों के बीच नीम की लकड़ी फँसाकर खुला रखें ताकि गैस बाहर निकल जाए।

6.दस्त लगना

यह रोग 3–4 महीने के बछड़े में ई कोलाई नामक जीवाणु के कारण होता है। यह संक्रामक रोग है।

इसमें बछड़े को सफेद दस्त होता हे जिसके कारण वह कमजोर हो जाता है। यह अधिक दूध पीने, गंदगी या ज्यादा खिलाने से होता है।

इलाजः

(क) बछड़ों को टेरामाइसिन को 5 ग्राम की गोली गुड़ के साथ खिलाना चाहिए।
(ख) रोगी पशु को अन्य पशुओं सक अलग रखें।

7. फारइन या जेर का बाहर न आना

कभी–कभी कमजोर या बीमार पशु को ब्याने के बाद समय से जेर बाहर नहीं आता है जिसके कारण बच्चेदानी में मवाद भर जाता है तथा बदबू आने लगती है।

इलाजः

(क) ऐसी स्थिति में तुरंत पशुचिकित्सक को बुलावें।
(ख) सल्फामीजाथीन की 6 गोलियाँ गुड़ या पानी में मिलाकर खिलाएँ।

8.बच्चेदानी बाहर आना

कभी–कभी ब्याने के पूर्व, ब्याने के समय या उसके पश्चात् बच्चेदानी पशु के शरीर से बाहर आ जाती है। यह रोग कमजोर पशुओं, अधिक उम्र के पशुओं तथा कई बार ब्याये पशुओं में अधिक होता है।

रोकथामः

(क) पशु के रहने का स्थान समतल होना चाहिए।
(ख) पशुओं का भरपूर मात्रा में संतुलित पौष्टिक आहार दें। आहार अपच, दस्त लगने वाला या कब्ज पैदा करने वाला नहीं होना चाहिए।
(ग) यदि बच्चेदानी बाहर आ गयी हो तो उसे लाल दवा (1 : 1000) के घोल से साफ कर अंदर डालने का प्रयास करें।
(घ) बाहर निकले हुए हिस्से को पक्षियों तथा मक्खियों से बचाने के लिए साफ गीले कपड़े से ढक दें एवं पशु चिकित्सक से सलाह लें।

9.दूध ज्वर या मिल्कफीवर

अधिक दूधदेने वाले पशुओं में ब्याने के 48–72 घंटों के अन्दर या प्रसव के अंतिम दिनों में शरीर में कैल्शियम तथा अन्य खनिज पदार्थो की कमी के कारण दूध ज्वर हो जाता है। इस बीमारी में पशु के खून में कैल्शियम की मात्रा 10–12 मि.ग्रा. हो जाती है।

लक्षण :

(क) शरीर कमजोर होना तथा शरीर में कंपन होना।
(ख) पशु का खड़ा रहने पर लड़खड़ाना तथा बैठ जाना।
(ग) शरीर का तापमान 35–36 डिग्री उतरना, कान ठंडा होना।
(घ) गर्दन मोड़कर बैठना।
(ड़) रोग की तीव्रता में पशु द्वारा पर लेट जाना तथा पूरा बदन ठंडा होना। सांस धीरे–धीरे चलना।

इलाजः

(क) प्रशिक्षित पशु चिकित्सक द्वारा 355–500 मि.ग्रा. कैल्शियम (बोरोग्लूकोनेट) का इंजेक्शन नस में देना चाहिये। इसके साथ 10 एम.एल. मल्टीविटामिन मिलाकर दिया जा सकता है।
(ख) पशु की अवस्था में सुधार होने पर कैल्शियम 100 एम.एल. दिन में दो बार धीरे–धीरे पिलाना चाहिए।

10.थनैला

अधिक दूध देने वाले संकर लस्ल के पशुओं में यह अक्सर होता है। इसमें थन में सूजन आ जाती है तथा वह कड़ा हो जाता हैं दूध आना कम हो जाता है तथ दूध में थक्का आने लगता है। थन छूने पर पशु लात मारता है।

इलाजः

(क) थन से पूरा दूध निकाल कर जमीन में गड्ढा खोदकर डाल दें तथा ऊपर से मिट्टी से ढंक दें।

(ख) दूध निकाल कर थन में एंटीबॉयोटिक दवा चढ़ा देना चाहिए।

(ग) थन को गर्म पानी में मेगासल्फ, बोरिक एसिड या नीम की पत्तियाँ डालकर सेंका जा सकता है।

विशेष : डॉक्टर की सलाह से ही दवाएँ खिलानी चाहिए।

11.जूं पड़ना

लक्षण:

जूं पड़ने से शरीर में खुजली एवं बेचैनी होना, पशु द्वारा खाना कम कर देना तथा कमजोर हो जाना।

इलाज:

(क) पशु को गुनगुने पानी में डिटॉल या लाल पोटाश डालकर कार्बोलिक साबुन से नहलाना चाहिए।

(ख) 2 लीटर पानी में 250 ग्राम तम्बाकू उबालकर इसमें 10 लीटर ठंडा पानी मिलाकर पशु के शरीर को धोना चाहिए तथा फिर साफ पानी से धोकर कपड़े से शरीर को अच्छी तरह पोछ देना चाहिए।

(ग) पशु के बथान पर नियमित गैमेक्सीन का छिड़काव करना चाहिए।

12.खुर सड़ना

कभी–कभी खुर में चोट लग जाने से जख्म होकर खुर सड़ जाता है तथा पशु लंगड़ाने लगता है।

इलाज :

(क) खुर को लाल पोटाश, सेवलॉन या डिटॉल के घोल से दिन में तीन चार बार साफ करें।

(ख) सड़े हुए स्थान पर हीमैक्स मलहम की पट्टी करें।

13.सर्दी–जुकाम एवं खाँसी

लक्षण:

सर्दी लगने से सांस लेने में कठिनाई, आँखें व नाक से पानी बहना, हल्का बुखार तथा खांसी आना।

इलाज:

(क) सर्दी होने पर 30–60 ग्राम पोटैशियम क्लोराइड, 30–60 ग्राम अमोनियम कार्बोनेट, 30 ग्राम मुलहटी एवं 60 ग्राम गुड़ का मिश्रण बनाकर पशु को दिन में दो चार बार चटाएँ।

(ख) खांसी होने पर कैफलान 30 से 40 ग्राम चावल के मांड या शीरा में मिलाकर दिन में एक बार तीन चार दिनों तक खिलाएँ।

(ग) 10 बूंद टिंचर बेंजोइन गर्म खौलते पानी में मिलाकर पशु के सामने 10–15 मिनट तक रखें ताकि भाप को पशु सांस द्वारा भीतर खींच सके। इस बात का ध्यान रखें कि पशु पानी नहीं पिये।

(घ) पशु को गर्म कमरे में रखें।

(ड़) रात और सुबह के समय बोरे का झूल पहनावें।

(च) आग का अलाव जलाकर अधिक सर्दी से बचाएँ परन्तु धुएँ से बचाकर रखें। सोने जाते समय आग बुझा दे अन्यथा पशु को आग से जलने का डर रहता है।

आलेख एवं प्रस्तुतिकरण:- पल्लव शेखर, सोनम भट्ट, अनिल कुमार एवं विवेक कुमार सिंह

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

निदेशक, प्रसार शिक्षा

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-14

Email: deebasupatna@gmail.com (Official), dee-basu-bih@gov.in

Mob.: +91 94306 02962, +91 80847 79374

First Print: 7992457574/ March 2021 Printed Under - SC-PLAN